पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
कुमार विकाश

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी से ही है पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका **-कुमार विकाश**

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या:

"चैट जीपीटी और जेमिनी साधन हैं, सोचने का विकल्प नहीं "

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या: "चैट जीपीटी और जेमिनी साधन हैं, सोचने का विकल्प नहीं "

आज का विद्यार्थी ऐसे दौर में शिक्षा प्राप्त कर रहा है, जहाँ ज्ञान उसकी उँगलियों के एक स्पर्श मात्र की दूरी पर उपलब्ध है। किसी प्रश्न का उत्तर चाहिए, किसी विषय की व्याख्या समझनी है, निबंध लिखना है, गणित का सवाल हल करना है या किसी कठिन अवधारणा को सरल भाषा में जानना है - ChatGPT, Gemini और ऐसे अनेक AI उपकरण कुछ ही क्षणों में सहायता के लिए तैयार हैं ।निस्संदेह, यह तकनीकी विकास मानव सभ्यता की एक बड़ी उपलब्धि है। लेकिन हर सुविधा के साथ एक जिम्मेदारी भी जुड़ी होती है। प्रश्न यह नहीं है कि AI का इस्तेमाल किया जाए या नहीं, बल्कि असली प्रश्न यह है कि AI का इस्तेमाल कितना और किस उद्देश्य से किया जाए?
आज हमें इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

दिमाग भी एक मांसपेशी की तरह है - उसे काम चाहिए, जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम आवश्यक है, उसी प्रकार मस्तिष्क की सक्रियता और बौद्धिक क्षमता के लिए सोचना, तर्क करना, प्रश्न पूछना, गलतियाँ करना, समस्याओं से जूझना और स्वयं समाधान खोजने का प्रयास करना आवश्यक है।

जब विद्यार्थी किसी प्रश्न को हल करने के लिए स्वयं प्रयास करता है, तो वह केवल उस प्रश्न का उत्तर नहीं खोज रहा होता; वह अपने मस्तिष्क में तर्क, स्मृति, विश्लेषण, कल्पना, निर्णय और समस्या-समाधान की क्षमता को विकसित कर रहा होता है

लेकिन यदि प्रश्न देखते ही विद्यार्थी बिना सोचे ChatGPT या Gemini से उत्तर प्राप्त कर लेता है, तो उसे उत्तर तो मिल जाता है, परंतु उत्तर तक पहुँचने की मानसिक यात्रा छूट जाती है और शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल उत्तर प्राप्त करना नहीं, बल्कि उत्तर खोजने की क्षमता विकसित करना है।

AI से उत्तर मिल सकता है, बुद्धि नहीं

मान लीजिए विद्यार्थी के सामने कोई कठिन गणितीय प्रश्न है। वह पाँच-दस मिनट सोचता है, कई बार असफल होता है, दोबारा प्रयास करता है और अंततः समाधान तक पहुँचता है। संभव है कि उसे उस प्रश्न में अधिक समय लगा हो, लेकिन उस दौरान उसका मस्तिष्क सक्रिय रहा।

दूसरी ओर, यदि उसने प्रश्न सीधे AI में डाल दिया और कुछ सेकंड में समाधान प्राप्त कर लिया, तो समय अवश्य बच गया, लेकिन उस प्रश्न ने उसके मस्तिष्क को उतनी चुनौती नहीं दी। यही अंतर 'काम पूरा करने' और 'क्षमता विकसित करने' के बीच है।

विद्यार्थी को यह समझना होगा कि -
हर वह समस्या जिसे हम स्वयं हल करते हैं, हमारे भीतर एक नई क्षमता पैदा करती है; और हर वह समस्या जिसे हम बिना प्रयास के दूसरों से हल करवाते हैं, हमारे अभ्यास का एक अवसर कम कर देती है।

AI बुरा नहीं है, उसका अतिरेक खतरनाक है
यह कहना भी उचित नहीं होगा कि ChatGPT या Gemini विद्यार्थियों के लिए नुकसानदायक ही हैं। वास्तव में इनका विवेकपूर्ण उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

AI विद्यार्थी को

- किसी कठिन विषय को सरल भाषा में समझने में मदद कर सकता है।
- अतिरिक्त उदाहरण उपलब्ध करा सकता है।
- किसी उत्तर की जाँच करने में सहायता कर सकता है।
- अलग-अलग दृष्टिकोण समझा सकता है।
- अभ्यास के लिए प्रश्न तैयार कर सकता है।
- भाषा, लेखन और प्रस्तुतीकरण को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।
- किसी समस्या के समाधान की दिशा दिखा सकता है।

लेकिन यँहा एक बहुत महत्वपूर्ण सीमा है

AI को अपना 'उत्तरदाता' बनाइए, अपना 'दिमाग' नहीं।
पहले स्वयं सोचिए, फिर AI से सहायता लीजिए।
पहले समाधान खोजिए, फिर AI से उसकी जाँच कराइए।
पहले अपनी भाषा में लिखिए, फिर AI से भाषा सुधारने को कहिए। यही अंतर AI को सहायक बनाता है और उसके अतिरेक को निर्भरता बनने से रोकता है।

सबसे बड़ा खतरा उत्तर नहीं, निर्भरता है

AI के अत्यधिक इस्तेमाल का सबसे गंभीर खतरा यह नहीं है कि विद्यार्थी गलत उत्तर सीख सकता है। उससे भी बड़ा खतरा यह है कि विद्यार्थी धीरे-धीरे स्वयं सोचने का अभ्यास खो सकता है। जब हर सवाल का जवाब तुरंत उपलब्ध हो, तो मनुष्य में सवाल के साथ कुछ समय बिताने का धैर्य कम हो सकता है।

सबसे बड़ा खतरा उत्तर नहीं, निर्भरता है

AI के अत्यधिक इस्तेमाल का सबसे गंभीर खतरा यह नहीं है कि विद्यार्थी गलत उत्तर सीख सकता है। उससे भी बड़ा खतरा यह है कि विद्यार्थी धीरे-धीरे स्वयं सोचने का अभ्यास खो सकता है। जब हर सवाल का जवाब तुरंत उपलब्ध हो, तो मनुष्य में सवाल के साथ कुछ समय बिताने का धैर्य कम हो सकता है।

आज विद्यार्थी को स्वयं से पूछना चाहिए

क्या मैं किसी प्रश्न का उत्तर इसलिए जानता हूँ क्योंकि मैंने उसे समझा है, या इसलिए क्योंकि AI ने मुझे बता दिया है?

क्या मैं किसी विषय पर अपने विचार व्यक्त कर सकता हूँ, यदि AI मेरे लिए न लिखे?

क्या मैं किसी कठिन समस्या पर दस मिनट, बीस मिनट या आधा घंटा स्वयं संघर्ष कर सकता हूँ?

क्या मैं बिना इंटरनेट और AI की सहायता के किसी विषय पर तर्क कर सकता हूँ? यदि इन प्रश्नों के उत्तर धीरे-धीरे 'नहीं' होने लगें, तो यह तकनीकी सुविधा नहीं, बल्कि बौद्धिक निर्भरता का संकेत है।

AI को साधन रखिए, साध्य मत बनाइए

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव के लिए बनाया गया एक शक्तिशाली उपकरण है। यह अनेक कार्यों को तेज, सरल और व्यवस्थित बना सकता है। लेकिन शिक्षा का लक्ष्य केवल काम को जल्दी पूरा करना नहीं है। शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य को अधिक सक्षम, अधिक विवेकशील, अधिक तार्किक और अधिक सृजनशील बनाना है। इसलिए विद्यार्थी को AI से डरने की नहीं, बल्कि उसे सही ढंग से इस्तेमाल करने की आवश्यकता है।

एक विद्यार्थी का आदर्श क्रम होना चाहिए

सोचो फिर प्रयास करो फिर गलती करो फिर पुनः प्रयास करो फिर समाधान खोजो उसके बाद फिर AI से जाँच/सहायता लो।

न कि -

प्रश्न देखो फिर AI में डालो फिर उत्तर कॉपी करो और आगे बढ़ जाओ।

पहला तरीका बुद्धि का विकास करता है।
दूसरा तरीका केवल काम पूरा करता है।

विद्यार्थियों के लिए पाँच स्वर्णिम नियम

1. हर प्रश्न तुरंत AI से मत पूछिए।
पहले स्वयं सोचने का पर्याप्त प्रयास कीजिए।

2. AI के उत्तर को अंतिम सत्य मत मानिए।
उसे समझिए, जाँचिए और अपने विवेक से स्वीकार कीजिए।

3. उत्तर कॉपी करने के बजाय अवधारणा समझिए।
ज्ञान वही है जिसे आप स्वयं समझाकर बता सकें।

4. प्रतिदिन कुछ समय 'AI-मुक्त अध्ययन' के लिए रखिए।
किताब, कागज, कलम और आपका अपना दिमाग - इतना ही पर्याप्त हो।

5. AI से अपनी क्षमता बढ़ाइए, अपनी क्षमता का स्थान मत दीजिए।

अंततः निर्णय मशीन का नहीं, मनुष्य का होना चाहिए

आने वाला समय AI का है, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि वह ऐसे मनुष्यों का समय हो जो AI का सही उपयोग करना जानते हों। भविष्य में सबसे सफल विद्यार्थी वह नहीं होगा जो सबसे अधिक AI इस्तेमाल करता है, बल्कि वह होगा जो AI से सहायता लेकर भी अपनी मौलिक सोच, तर्कशक्ति, कल्पनाशक्ति और निर्णय क्षमता को जीवित रखता है।

याद रखिए -

AI आपके लिए सोच सकता है, लेकिन आपको अपना सोचने का अधिकार और क्षमता किसी मशीन को नहीं सौंपनी चाहिए। जिस दिमाग को हर समस्या का तैयार उत्तर मिलता रहेगा, वह उत्तरों का भंडार तो बन सकता है, लेकिन समाधान खोजने वाला मस्तिष्क बनने का अभ्यास खो सकता है।

इसलिए ChatGPT हो या Gemini - इनका उपयोग कीजिए, लेकिन सीमा के साथ।
AI को अपना सहायक बनाइए, स्वामी नहीं।
उसे अपनी बैसाखी मत बनाइए, अपना औजार बनाइए।
उत्तर उससे लीजिए, लेकिन सोच अपनी रखिए।

क्योंकि अंततः -
तकनीक मनुष्य की बुद्धि को बढ़ाने के लिए है,
मनुष्य की बुद्धि का स्थान लेने के लिए नहीं।
और जिस दिन विद्यार्थी स्वयं से प्रश्न पूछना, स्वयं तर्क करना और स्वयं समाधान खोजना छोड़ देगा, उस दिन समस्या केवल AI की नहीं होगी - समस्या हमारी शिक्षा और हमारे बौद्धिक भविष्य की होगी।
इसलिए AI का प्रयोग करें, लेकिन अपने मस्तिष्क का व्यायाम बंद न करें।
क्योंकि मशीन आपको उत्तर दे सकती है,
पर आपकी बुद्धि ही आपको उत्तर खोजने योग्य बनाती है।

-कुमार विकाश
रेवाड़ी, हरियाणा।।

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ......... **कुमार विकाश** ....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...